Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 3 | ISSUE : 3 | MARCH 2017

किशोरावस्था विद्यार्थियों की संगीत अभिरुचि का अध्ययन

डॉ. अनिल कुमार जैन [1] | डॉ. यतीन कुमार चौबीसा [2]

[1] सह आचार्य एवं निदेशक (शिक्षा संकाय), वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा, (राज.)

[2] सहायक आचार्य (शिक्षा संकाय), विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान रामगिरी, उदयपुर, (राज.)

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य किशोरावस्था के विद्यार्थियों की संगीत अभिरुचि के स्तर का अध्ययन करना था। इस कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन में उदयपुर शहर के राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 10 के 108 बालक एवं 92 बालिका सहित कुल 200 विद्यार्थियों का देव निदेशन विधि द्वारा चयन किया गया। इस हेतु स्वनिर्मित संगीत अभिरुचि प्रश्नावली का उपयोग किया गया। सांख्यिकी के रूप में प्रतिशतता एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से पता चलता है कि संगीत अभिरुचि के अति उच्च, उच्च एवं निम्न स्तर पर बालिका विद्यार्थियों की संख्या बालक विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है, जबकि सामान्य एवं अति निम्न स्तर पर बालक विद्यार्थियों की संख्या में अधिकता है। इसके अतिरिक्त किशोर बालक बालिका के संगीत अभिरुचि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

Keywords: *किशोरावस्था एवं संगीत अभिरुचि।*

प्रस्तावना

"विभिन्न कलाओं के समान संगीत भी एक महत्वपूर्ण कला है। यह भाव प्रकट करने का सर्वोत्तम साधन है। संगीत का निकटतम संबंध मानव के हृदय से है। अतः जब से मानव का अस्तित्व इस सृष्टि पर है तभी से संगीत के आविर्भाव का अनुमान लगाया जाता है। एक प्रकार से मानव हृदय का ही दूसरा नाम संगीत है। यही कारण है कि मानव की अभिरुचि संगीत में सदैव रही है। संगीत मानव को भगवान व प्रकृति द्वारा प्रदत्त सबसे बड़ी देन है। संगीत का अध्ययन मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाता है। संगीत द्वारा मनुष्य में सौंदर्य के प्रति संवेदनशीलता का विकास होता है। जिससे उसमें सांस्कृतिक परिष्कार आता है। संगीत शिक्षा आधारभूत मूल प्रवृतियों का मार्ग अंतरण करके उसका समाजीकरण करती है।

"महात्मा गांधी के अनुसार "शिक्षा का अर्थ मैं बालक अथवा मनुष्य में आत्मा, शरीर और बुद्धि के सर्वांगीण और सबसे अच्छे विकास से समझता हूं ।"

अर्थात शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया में बालक के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष का विकास होता है। बालक के व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया में भावात्मक पक्ष का महत्वपूर्ण स्थान है। भावात्मक विकास के अंतर्गत सौंदर्य शास्त्र से संबंधित विषयों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस क्रम में संगीत से जुड़ी क्रियाएं एवं ज्ञान का व्यक्ति के विकास पर प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थी समय-समय पर नृत्य, गीत एवं वादन कला के माध्यम से अपने भावनात्मक पक्ष को प्रस्तुत करता है।

बालक विद्यालय शिक्षा के अंतर्गत माध्यमिक स्तर पर समस्त विषयों के अध्ययन के पश्चात उच्च माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र चयन करने हेतु द्वंद्व की स्थिति में रहता है। विद्यार्थी के मन में विषय चयन की एक महत्वपूर्ण समस्या रहती है। बालक को अपने रुचि के विषय के साथ कार्य करने हेतु सही जानकारी का होना आवश्यक है । पायलट अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों की संगीत अभिरुचि के विषय में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। वह इस आधार पर अपने विषय का चयन कर उस क्षेत्र विशेष में अपने कौशल का विकास कर सकता हैं। अपने रूचि के क्षेत्र को चयन करते हुए वह उसके अंतर्गत अपने भविष्य का निर्माण करते हैं। संगीत विषय के क्षेत्र में रुचि रखने वाले विद्यार्थी का व्यक्तित्व एवं सौंदर्य बोध का उसके भावात्मक विकास से विशेष रूप से संबंध होता है। बालक की कोमल भावनाओं को स्पंदित एवं तरंगित करके उसमें आनंद का संचार संगीत के माध्यम से होता है। अतः संगीत आनंद प्राप्त करने की एक अद्भुत शक्ति है।

साहित्यावलोकन

ग्राहम एफ वेल्क व मिशेल वाइससिटी (2020) ने मानव विकास और कल्याण पर संगीत के प्रभाव विषय पर अध्ययन किया। इनके अध्ययन से पता चलता है कि संगीत गतिविधि में शामिल होने से स्वास्थ्य और कल्याण पर विभिन्न तरीकों से सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। **शादरा एल.बोसाकी व सु शान ए. ओनिल (2013)** ने किशोरों की भावनात्मक धारणा एवं रोजमर्रा की जिंदगी में लोकप्रिय संगीत गतिविधियों के साथ जुड़ाव विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन से पता चलता है कि सभी किशोरों के लिए संज्ञानात्मक क्षमता और शारीरिक अनुभवों की तुलना में अधिक संख्या में युवाओं ने लोकप्रिय संगीत को भावनात्मक या आध्यात्मिक अनुभव के रूप में संदर्भित किया है। **ट्रेलर लॉरेल (2006)** ने संगीत विषय तथा मस्तिष्क विकास व स्मृति में संबंध विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन से पता चलता है कि संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं करने वाले बच्चों की तुलना में जो बच्चे संगीत से जुड़े हैं उनके अंदर मस्तिष्क के विकास में बेहतर स्मृति को देखा गया। **छाबड़ा सोनल व मिश्रा महिमा (2020)** ने किशोर छात्रों की व्यक्तिगत मूल्यों पर संगीत सीखने के प्रभाव का अध्ययन किया। परिणामों के रूप में पता चलता है कि संगीत सीखना किशोरों के व्यक्तिगत मूल्यों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन करने से पता चलता है कि व्यक्तिगत मूल्य , मानव कल्याण, संगीत शिक्षा, संगीत के पाठ, स्मृति, सामाजिक कौशल , किशोरों की भावनात्मक धारणाएं, सीखने का स्थानांतरण जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कार्य हुआ है। लेकिन किशोरावस्था के अंतर्गत विद्यार्थियों की संगीत अभिरुचि को जांचने एवं उनके स्तर का पता लगाने संबंधी कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। जो कार्य हुए भी हैं वह अन्य विधि एवं तरीकों से किए गए हैं। अतः इस शोध अंतराल के माध्यम से प्रस्तुत अध्ययन कार्य को पूर्ण करने की शोधार्थी को दिशा प्राप्त हुई है।

शोध उद्देश्य

1 किशोरावस्था विद्यार्थियों की संगीत अभिरुचि के स्तर का पता लगाना।

2 बालक व बालिका विद्यार्थियों की संगीत अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। यह अध्ययन कार्य उदयपुर शहर के राजकीय विद्यालय में अध्ययन करने वाले कक्षा 10 के 108 बालकों व 92 बालिकओ सहित कुल 200 विद्यार्थियों पर किया गया। विद्यार्थियों का चयन देव निदेशन द्वारा किया गया। इस हेतु संगीत अभिरुचि के स्तर का पता लगाने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में सांख्यिकी प्रविधि के रूप में प्रतिशतता एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया।

प्रदतो का विश्लेषण व व्याख्या

सारणी क्रमांक: 1

किशोरावस्था विद्यार्थियों की संगीत अभिरुचि के विभिन्न स्तरों के आधार पर संख्या एवं प्रतिशतता

Levels of Interest अभिरुचि के स्तर	Boys बालक संख्या	Boys बालक प्रतिशत %	Girls बालिका संख्या	Girls बालिका प्रतिशत %	Total योग	Total योग प्रतिशत%
Very High (48 and Above) अति उच्च	4	3.70	5	5.43	9	4.5
High (38 to 48) उच्च	22	20.37	32	34.78	54	27

Moderate (27 to 38) सामान्य	55	50.93	32	34.78	87	43.5
Low (17 to 27) निम्न	24	22.22	21	22.83	45	22.5
Very Low (Below 17) अति निम्न	3	2.78	2	2.17	5	2.5
	108	100	92	100	200	100

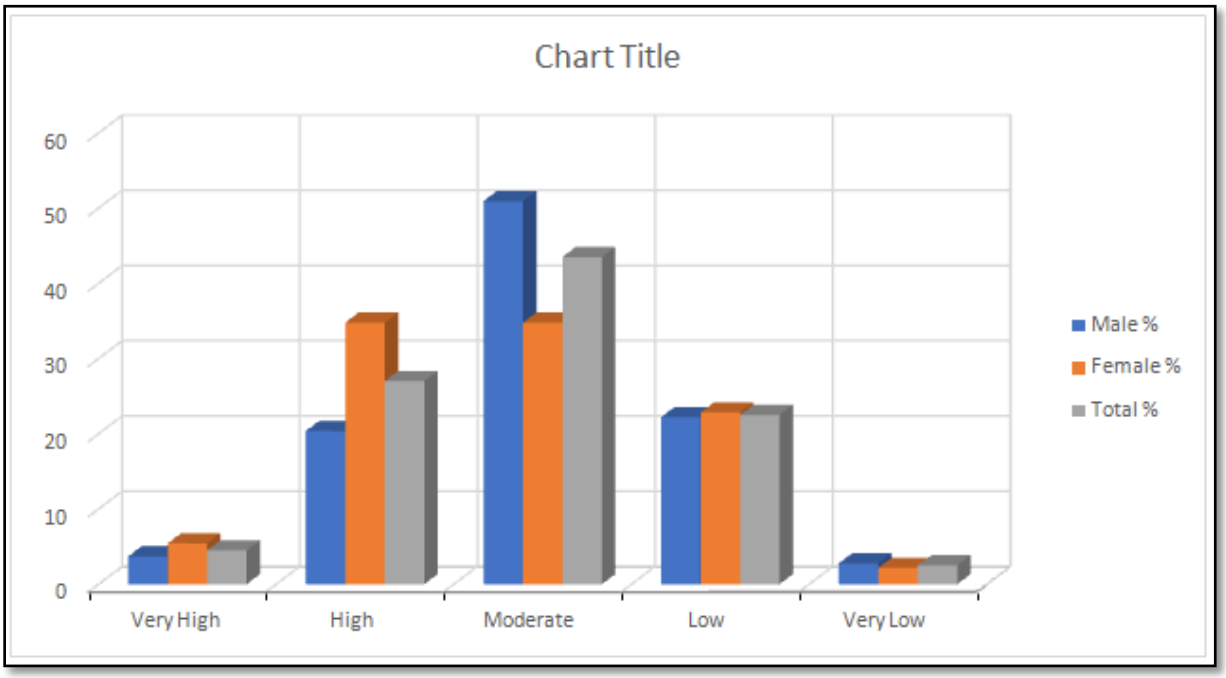

आरेख क्रमांक: 1

किशोरावस्था विद्यार्थियों की संगीत अभिरुचि के विभिन्न स्तरों के आधार पर प्रतिशतता

सारणी व आरेख क्रमांक 1 को देखने से स्पष्ट पता चलता है कि किशोरावस्था में विद्यार्थियों की संगीत अभिरुचि के अति उच्च स्तर पर पुरुष व महिला मे संख्या का प्रतिशत क्रमशः 3.70 व 5.43 है। संगीत अभिरुचि के विभिन्न स्तरो मे उच्च स्तर पर पुरुष व महिला का प्रतिशत क्रमश 20.37 व 34.78, सामान्य स्तर पर 50.93 व 34.78, निम्न स्तर पर 22.22 व 22.83 एवं अति निम्न स्तर पर 2.78 व 2.17 है। अतः हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि संगीत अभिरुचि के अंतर्गत अति उच्च, उच्च एवं निम्न तीनों स्तरों पर महिला की पुरुष की अपेक्षा संगीत मे अभिरुचि अधिक है। जबकि सामान्य एवं अति निम्न स्तरों पर पुरुष की संगीत अभिरुचि महिला से संख्या में अधिक है।

सारणी क्रमांक: 2

किशोर बालक व बालिका की संगीत अभिरुचि के विभिन्न स्तर संबंधी प्रदत्त का मध्यमान मानक विचलन एवं टी मूल्य

Boys बालक	Girls बालिका	MEAN DIFF.	STENDER मानक त्रुटि	T VALUE टी मूल्य	Significant Level

N संख्या	MEAN माध्य	SD मानक विचलन	N संख्या	MEAN माध्य	SD मानक विचलन	माध्य अंतर			सार्थकता स्तर
108	31.98	8.69	92	33.53	8.78	1.55	1.24	1.25	असार्थक

(* 0.05 स्तर पर, ** 0.05 व 0.01 दोनों स्तरों पर)

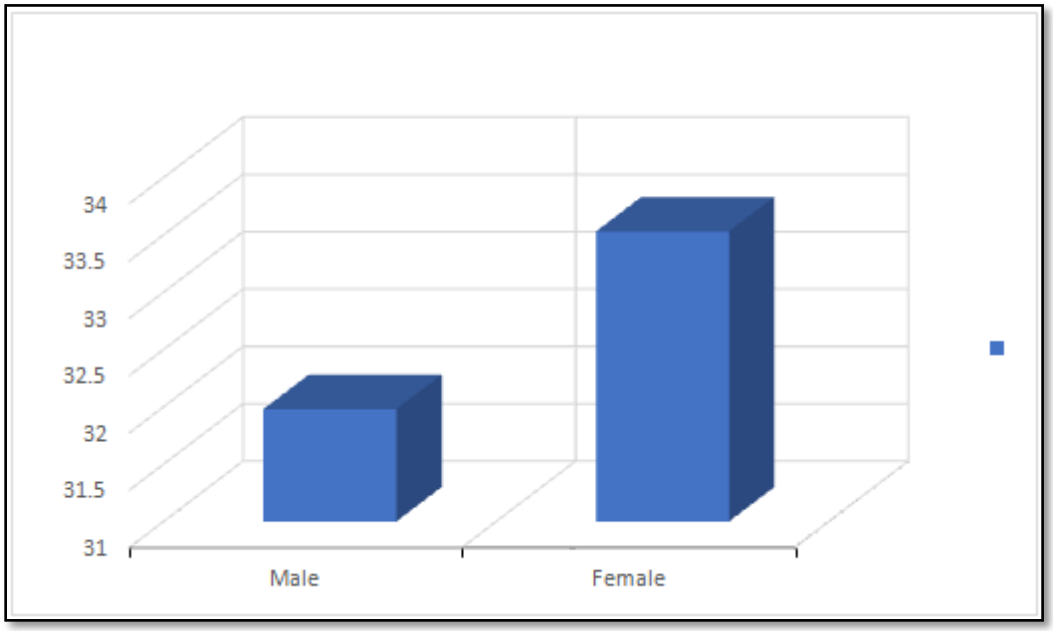

आरेख क्रमांक : 2

किशोर बालक व बालिका की संगीत अभिरुचि के विभिन्न स्तर संबंधी प्रदत्त का मध्यमान

सारणी व आरेख क्रमांक 2 को देखने से स्पष्ट पता चलता है कि किशोर बालक व बालिका के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 31.98 व 33.53 है। इनका मानक विचलन भी क्रमशः 8.69 व 8.78 है। दोनों समूह के विद्यार्थियों के प्रदत्तों के मध्य टी मूल्य 1.25 है, जो कि 198 df पर 0.05 एवं 0.01 स्तर के दोनों विश्वसनीय सूत्रों के परीकलित मान क्रमशः 1.97 व 2.60 से कम है। शून्य परिकल्पना को स्वीकृत करते हुए हम निष्कर्ष रूप में यह कह सकते हैं कि किशोर बालक व बालिका के संगीत अभिरुचि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष

1 संगीत अभिरुचि के अति उच्च, उच्च एवं निम्न स्तर पर बालिका विद्यार्थियों की संख्या बालक विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है, जबकि सामान्य एवं अति निम्न स्तर पर बालक विद्यार्थियों की संख्या में अधिकता है।

2 किशोर बालक बालिका के संगीत अभिरुचि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

1 प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि

संगीत अभिरुचि विद्यार्थियों को अपने शिक्षा के उच्च स्तर में व्यवसायिक विषय का चयन करने में मददगार हो सकती है।

2 विद्यार्थी बिना लैंगिक भेदभाव के समान रूप से संगीत विषयों से जुड़कर विद्यालय जीवन एवं उसके पश्चात अपने भावी जीवन में संगीत के क्षेत्र में कार्य कर अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत करने हेतु प्रेरित हो सकेंगे।

3 विद्यार्थी विद्यालय के अंतर्गत साहित्यिक गतिविधियों में संगीत से जुड़कर कार्यक्रमों को आयोजित करने में दिलचस्पी ले सकेंगे

4 विद्यार्थी संगीत विषय को अपने जीवन में अपने रुचि के कौशल के आधार पर अपनाते हुए उच्च शिक्षा के अंतर्गत प्रयोग कर सकेंगे।

REFERENCES

1. भटनागर, ए.बी. एवं भटनागर मीनाक्षी*(1996): "* मापन एवं मूल्यांकन*"*, मेरठ,आर. लाल बुक डिपो ।

2. गोस्वामी, नव प्रभाकर एवं माथुर प्रीति*(2017): "* शिक्षा में नाटक और कला*"*, जयपुर, आस्था प्रकाशन ।

3. गुप्ता, एस.पी.*(2008): "* आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन*"*, इलाहाबाद,शारदा पुस्तक भवन।

4. जायसवाल, सीताराम*(1978): "* शिक्षा मनोविज्ञान*"*, लखनऊ,प्रकाशन केंद्र पोस्ट ऑफिस महानगर सीतापुर रोड।

5. कुलकर्णी, वसुधा*(1990): "* भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान*"*, जोधपुर ,राजस्थानी ग्रंथागार ।

6. मंगल, एस.के.*(2013): "*शिक्षा मनोविज्ञान*"*,दिल्ली , पी. एच. आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

7. शर्मा, आर. ए. *(2012): "*शिक्षा अनुसंधान*"*, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो ।

8. टंडन, नीतू *(2016): "*संगीत शिक्षण*"*, आगरा ,राखी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड।

9. सक्सेना, एन. आर. स्वरूप एवं चतुर्वेदी शिखा*(2007): "*शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत विश्व ज्ञानकोष*"*, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।

10. *Chabra, Sonal and Mishra Mahima (2012): "A study of the effect of learning music on the personal values of adolescent students", Rawal college of Education, Faridabad, Haryana.*

11. *Sandra L Bisa ki and Susan A. O'Neill (2013): "Early adolescents emotional perception and engagement with popular music activities in everyday life", International Journal of adolcences and youth, Vol 20,Issue 2,Pages 228-244.*

12. https://psycnet.apa.org/record/2020-43913-001

13. http://mierjs.in/index.php/mjestp/article/view/1566

14. https://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1080/14613808.2012.657168

15. https://journals.sagepub.com/doi/abs/10.1177/0305735613482024